हम लेंगे ऐसे बदला

(सभी कलाकार घेरे में बैठे हैं। एक कलाकार नाटक की पृष्ठभूमि के बारे में लोगों से बात करता है। जिसमें आज इन्सानियत के सामने प्रस्तुत खतरों और उनसे निपटने की रणनीति पर चर्चा की जाती है।)

मेहनत का जोर है हइशा भई हइशा
काम पुरजोर है हइशा भई हइशा .....

की धुन पर पत्थर तोड़ने, टोकरों में भर–भर कर ढोने, तोड़ने के लिए पत्थर लाने का अभिनय किया जाता है। हइशा की धुन बीच–बीच में बदलती है जिससे काम के बोझ और काम में लगे लोगों की स्थिति का पता चलता है।

इसी धुन पे काम करते–करते मजदूर बदल जाते हैं और काम भी बदल जाता है। लोहे का काम करने वाले मज़दूर काम करते हैं एक घन चलाता है, एक बारी–बारी से कोई चीज घन के नीचे रखता है, दूसरा मज़दूर बारी–बारी से उसे उठाता है। एक मज़दूर उनको उठा कर कहीं दूसरी जगह रखता है।

हइशा की धुन धीरे–धीरे मन्द पड़ती है और सभी कलाकार एक बड़ी मशीन की आकृति बनाते हैं। उस मशीन से अलग–अलग आवाजें आती हैं उसकी गति धीरे–धीरे तेज होती है। सीटी जैसी तेज आवाज के साथ मशीन रूक जाती है।

तेल के डिपो का दृश्य बनाया जाता है। लम्बी लाइन में बच्चे, महिलाएं और पुरूष खड़े हैं। लाइन में धक्का–मुक्की चल रही है। एक बुजुर्ग लाइन में बीच में घुसने का प्रयास करता है। उसे पीछे धकेल दिया जाता है। एक बच्चा अपनी केन लाइन में रखकर कहीं जाता है। जब वह वापस आता है तो उसके लाइन में घुसने पर विवाद उठ खड़ा होता है। तेल डिपो का कर्ता–धर्ता दो लोगों को तेल देने के बाद बाकी लोगों को मना कर देता है। सभी लोग लाइन तोड़ कर उससे तेल देने का आग्रह करते हैं लेकिन वह नहीं मानता। इससे विवाद बढ़ जाता है, हाथापाई होती है और कुछ लोग तेल के केन भर कर भाग जाते हैं।

एक गरीब परिवार का दृश्य बनाया जाता है जिसमें एक बूढ़ा पेट पर हाथ रखकर आता है और घेरे के एक तरफ बैठ जाता है। धीरे–धीरे पूरा परिवार जमा हो जाता है। इतने में एक युवक शराब की बोतल लेकर घर में प्रवेश करता है। एक महिला उससे बोतल छीनने का प्रयास करती है और उसकी पिटाई भी करती है, आखिरकार बोतल छीन कर फेंक देती है। वह वापस थप्पड़ मारने का प्रयास करता है तो बुजुर्ग उसको धमकाता है और चुप पड़े रहने को कहता है।

घेरे के दूसरी ओर एक दूसरा परिवार ऐसे ही भूखा बैठा है। वो सब मज़दूरी करके थके हारे आए हैं लेकिन घर में खाने को कुछ नहीं है। थोड़ी ही देर में एक बच्ची आकर खाना मांगती है।

बच्ची : मां, भूख लगी है, रोटी दे दो।

(मां उसको प्यार से सहलाकर पास बिठा लेती है और बच्ची लेट जाती है।

कुछ ही देर में सभी उठ कर चले जाते हैं, दोनों बच्चे घेरे के मध्य में सोते रह जाते हैं।

तीन कलाकार एक सिरे पर खड़े हो कर इब्ने इंशा की कविता बोलते हैं –

ये बच्चा किसका बच्चा है
ये बच्चा काला–काला सा
ये काला सा मटियाला सा
ये बच्चा किसका बच्चा है
जो रेट पे तन्हा बैठा है
ना इसके पेट में रोटी है
ना इसके तन पर कपड़ा है
ना इसके सर पर टोपी है
ना इसके पैर में जूता है
ये बच्चा किसका बच्चा है ?

इसके बाद दो कलाकार घेरे के केन्द्र में पीठ से पीठ जोड़कर स्टूल पर बैठकर शुभा की कविता 'फालतू बच्चा' प्रस्तुत करते हैं।

यह बच्चा, जो चिथड़ों में लिपटा
यहां टोकरे में सो रहा है
फालतू है
यह बच्चा, जो
मैल से ढका
दौड़–दौड़ कर, धुले गिलास
ला रहा है, फालतू है
यह अपने माता–पिता का,
पहला बच्चा है, लेकिन यह फालतू है
काई फर्क नहीं पड़ता राज्य को
यह मर जाये तो,
बीस करोड़ हैं इसकी जगह लेने के लिए
फिर यह बच्चा, अपने जीने के अधिकार को
सिद्ध नहीं कर सकता, न्यायालय के समक्ष
इसलिए भी, यह बच्चा फालतू है
फालतू बच्चा हर महामारी की पहूंच में है
इसलिए भी वह फालतू है।

(एक पात्र सभी को संबोधित करते हुए बोलते हैं)

हां, यह बच्चा फालतू है। देश की ज्यादातर मेहनतकश आबादी फालतू है। ये लोग 18–18 और 20–20 घण्टे हाड़तोड़ मेहनत करते हैं, देश के लिए अन्न पैदा करत हैं, ऊंची–ऊंची इमारतें खड़ी

करते हैं, कलकारखाने चलाते हैं, लेकिन ये फालतू हैं, ये दौलत पैदा करते हैं और भूखे मरते हैं। कपड़े बुनते हैं और नंगे रहते हैं। ऊंची–ऊंची इमारते खड़ी करते हैं और फुटपाथ पर सोते हैं। देश के रहनुमा देश को बेचने में और देश की दौलत को लूटने में व्यस्त हैं। 55 साल की आजादी में उन्हें फुरसत नहीं मिली कि देश की जनता के लिए पीने के पानी का इन्तजाम कर सकते हैं।

'हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है' के साथ और हाथ में झण्डा लेकर सभी कलाकार एक जुलूस का दृश्य बनाते हैं। कलाकार नारे लगाते हुए घेरे के दो चक्कर लगाते हैं। (नारे प्रदर्शन के स्थान और दर्शकों की उपस्थिति के हिसाब से, शिक्षा, रोजगार, छंटनी–तालाबन्दी, भाईचारे के लिए, आदि से सम्बंधित लगाए जा सकते हैं।

प्रशासन तन्त्र द्वारा *(जिसमें पुलिस और गण्डे भी हो सकते हैं)* इस जुलूस को रोकने का प्रयास होते हैं।

पुलिस : ऐ क्यों शोर मचा रखा है, सब अपने–अपने घर जाओ। (लोग नारे लगाते रहते हैं)
पुलिस : एक चलो अपने घर, जाओ यहां से
(लाठी चार्ज करते हैं, सभी प्रदर्शनकारी गिर जाते हैं, पुलिस चली जाती है।
बाद में महिला प्रदर्शकारी उठकर नारे लगाते हुए चले जाते हैं और पुलिस संघी बाना पहन कर अगले दृश्य की तैयारी करते हैं।)

(पुरूष कलाकार संघी वेशभूषा में परेड की तैयारी में खड़े हैं और एक कलाकार चेताने और भड़काने के अन्दाज में अभिनय करता हुआ मनमोहन की कविता का पाठ करता है। बाकी कलाकार उसका अनुशरण करते हैं।

कहो कि ये सब बलवाई हैं
बागी हैं सब दंगाई हैं
कहो अजब षड़यन्त्र हुआ है
व्यर्थ यहां जनतन्त्र हुआ है
इधर–उधर नरमेध कराओ
ऊपर से तुरही बजवाओ
इनसे उनसे बात चलाओ
आकाओं को दूत पठाओ
संपादक से लेख लिखा
फौरन कुछ बारूद मंगाओ

(इसके बाद काली ताकतों की परेड होती है और दायरे में बैठे कलाकार कविता बोलते हैं।)

एक ही जहाज पर सवार हैं
सांसद, सेनानायक बड़ी पूंजी के
वफादार नुमाइन्दे, सामन्त
नामी सट्टेबाज, शहर के मशहूर जल्लाद
चतुर चालाक नौकरशाह

पुश्तैनी मुसाहिब और रंगरूठ
बूढे घोड़े और बहरे तबलची
भाई बिरादर और छुटभैये
चिलमची और तोपची

(इसके बाद मनमोहन की कविता 'हमीं हम' के अंशों पर अभिनय किया जाता है।)

हमीं हम हमीं हम
रहेंगे जहां में
हमीं हम हमीं हम
जमीं आस्मां में
हमीं हम हमीं हम
नफीरी ये बाजे
नगाड़े ये तासे
कि बजता है डंका
धमाधम धमाधम
हमीं हम हमीं हम
हमीं हम हमीं हम

ये खुखरी ये छुरियां
ये त्रिशूल तेगे
ये फरसे में बल्लम
ये लकदम चमानम
ये नफरत का परचम
हमीं हम हमीं हम
हमीं हम हमीं हम

ये अपनी ज़मी है
ये खाली करा लो
वो अपनी ज़मी है
उसे नाप डालो
ये अपने ही गलियां
ये अपनी ही नदियां
कि खूनों की धारें
यहां पर बहा दो
यहां वहां तक
ये लाशें बिछा दो
सरो को उड़ाते

धड़ों को गिराते
ये गाओ तराना
हमीं हम हमीं हम
हमीं हम हमीं हम

न सोचो ये बालक है
बूढ़ा है क्या है
न सोचो ये भाई है
बेटी है मां है
पड़ौसी जो सुख दुख का
साथी रहा है
न सोचो कि इसकी है
किसकी खता है
न सोचो न सोचो
न सोचो ये क्या है

अरे तू है गुरखा
अरे तू है मराठा
तू बामन का जाया
तो क्या मोह माया
ओ लोरिक की सेना
ओ छत्री की सेना
ये देखो कि बैरी का
साया बचे ना

यही है यही है
जो आगे अड़ा है
यही है यही है
जो सिर पर चढ़ा है
हां ये भी ये भी
जो पीछे खड़ा है
ये दायें खड़ा है
ये बायें खड़ा है
खड़ा है खड़ा है
खड़ा है खड़ा है
अरे जल्द थामो
कि जाने न पाये

कि चीखे पै कुछ भी
बताने न पाये
कि पल्टो, कि काटो
कि रस्ता बनाओ
अब कैसा रहम
और कैसा करम, हां
हमीं हम हमीं हम
हमीं हम हमीं हम
रहेंगे जहां में
हमीं हम जमीं पै
हमें आस्मां पै।

कविता के बाद दंगे की तैयारी होती है और दंगे का दृश्य बनाया जाता है। एक झुंड में हमला करने के लिए आगे बढ़ते हैं। एक भयानक चीख के साथ, इस झुंड का लीटर किसी बच्चे का पीछा करने का आदेश देता है 'पकड़ो साले छोकरे को।' भीड़ उसको पकड़ती है। एक अभिनेता उसे तलवार से या छुरे से मारने का प्रयास करता है। और अपना लहू से सना छुरा चमकाने का अभिनय करता है। भीड़ का नेता बिना शब्द बोले 'जय श्री राम' का उदघोष करता है। बाकी भीड़ उसी टोन में जवाब देती है।

इसके बाद लीडर घरों, दुकानों को आग के हवाले करने का आदेश देता है। भीड़ लूटपाट करती है और आग लगाने का अभिनय करती है। इसी तरह वे फ्रीज हो जाते हैं। तब नीचे से कविता बोली जाती है। कविता मनमोहन की है –

छुरे हमारे हाथों में हैं
दिल में फड़क पुरानी
जांबाजी है फितरत अपनी
हम कातिल लासानी
    कलावंत मनोरंजन करते
    सम्पादक हकलाते
    अफसर घर का पानी भरते
    मन्त्री नाच दिखाते
भारत माता–माता अपनी
पलिस हमारा डंडा
तीन पांच यदि कोई करता
हो जाएगा ठण्डा।

दंभ के स्वर आवाज करके भीड़ वहां से चली जाती है। सबसे पहले महिलाएं जले हुए मलबे को देखने पहुंचती है और स्तब्ध रह जाती है। फिर उग्र भीड़ की वेशभूषा को उतार कर और साधारण लोगों के रूप में वही युवा भी इसमें शामिल हो सकते हैं। या अन्य लोग भी हो सकते हैं। स्तब्ध लोग धीरे–धीरे सचेत होते हैं। स्तब्ध लोग धीरे–धीरे एक घेरा बनाते हैं और बीच में एक कलाकार गीत गाना शुरू करता है।

    ये जो सड़क पर लहू बह रहा है
    इसे सूंघ कर तो देखो, सूंघ कर तो देखो

और पहचानने की कोशिश करो कि ये
हिन्दू का है या मुसलमान का

सड़क पर बिखरे हुए पत्थरों के बीच पड़े टिफिन केरियर से
ये जो रोटी की गंध आ रही है,
ये किस जाति का है किस जाति की है
क्या तुम मुझे ये सब बता सकते हो –2

(कोरस घेरे से केन्द्र की ओर बढ़ते हुए बोलता है)

मैं बता सकता हूँ हां–हां मैं बता सकता हूँ
ये रक्त सने कपड़े उस आदमी के है
जिसके हाथ मिलो में कपड़ा बुनते हैं
कारखानों में जूते बनाते हैं
और शहर की अन्धेरी सड़कों पर
लेम्प पोस्ट जलाते हैं, लेम्प पोस्ट जलाते हैं

गीत खत्म होते–होते दूसरा कलाकार केन्द्र में आता है और अगला गीत शुरू करता है।

ख़ौफ ही वो ज़मीं है कि जिसमें
फिरके पलते हैं फिरके उगते हैं
घार सागर के कटके चलते हैं
खौफ जब तक दिलों में बाकी है
सिर्फ चेहरा बदलते रहता है
सिर्फ लहजा बदलते रहता है
बर्फ सी जम गयी है सिनो पर
गर्म सांसों से इसको पिघला दो, पिघला दो
ताकि रोशनी इनमें आ भी सकेगी की
रोशनी इनमें जा भी सकेगी की

(इन अन्तिम दो लाइनों को पूरा कोरस झूम–झूम कर गाता है)

इसके बाद घेरे में से तीन या चार पुरूष पात्र घेरे से बाहर आकर ताश खेलने का अभिनय करते हैं और बाकी कलाकार उसी तरह से घेरे में चारों तरफ दर्शकों को सम्बोधित करते हुए अगला गीत गाते हैं।

ये सितम और कि हम भूल गये खारों को
इसे तो आग ही लग जाए समझदारों को –2
ये देखो घर वो जला, वो देखो बस्ती लुटी –2
ये देखो इंसा मरा वो देखो अस्मत लुटी –2
क्या करूं देख के मुझ को तो हंसी आती है –3

(एक पात्र अखबार पढ़ने का अभिनय करता है)

कैसे पढ़ लेते हैं वो आज के अखबारों को –2
इसे तो आग ही लग जाए समझदारों को –2
जमाना देखता है जमाना सोचता है –2
जमाना देख के भी क्यूं नहीं कुछ बोलता है
क्या सुनेगा कोई नक्कारखाने में तूती–2
(एक पात्र सोने का अभिनय करता है)
नींद प्यारी है मेरे दौर के फनकारों को –2
इसे तो आग ही लग जाए समझदारों को –2

(ताश खेलने वाले कालाकर भी अब उठ जाते हैं और घेरे में शामिल हो जाते हैं। एक कलाकार गीत शुरू करता है, सभी दोहराते हैं)

हमें कहेंगे अमन –2
हम कहेंगे महोब्बत–2
हम कहेंगे जद्दोजेहद–2
हम कहेंगे इन्सान–2
इन्सानियत की बोली को नये सिरे से रचेंगे हम –2
नये शब्द बनाएंगे अर्थो से –2
हम लेंगे ऐसे बदला उनसे
उनसे हां–हां उनसे।